IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

Prabha Khetan ke Sahitya mein Nari ke Samajik Yathartha ka Chitran

Nawal Kishore
Lecturer, Department of Hindi, Government College, Barmer, India

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास सम्भव है। समाज में ही उसे चहुँमुखी विकास की सभी सुविधाएं एवं परिस्थितियाँ उपलब्ध होती है। धर्म, शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, राजनीति आदि समाज को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। मनुष्य की पारस्परिक अन्तःक्रियाएँ व प्रतिक्रियाओं के द्वारा ही समाज का निर्माण होता है। इन्हीं के द्वारा समाज का विकास भी होता है तथा समाज की एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को उसके कल्याण हेतु अपने अनुभव हस्तांतरित करती है।

साहित्यकार भी समाज का ही अंग है। इसलिए कोई भी साहित्यकार जब अपने साहित्य का सृजन करता है तो वह समाज से हटकर कुछ भी निर्माण नहीं कर सकता है। समाज का प्रतिबिम्ब उसके साहित्य में अवश्य ही दिखाई पड़ता है। प्रसिद्ध महिला लेखिका प्रभा खेतान के साहित्य में भी मारवाड़ी समाज के बनते–बिगड़ते रिश्तों व सामाजिक जीवन का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। साथ ही प्रभाजी ने मारवाड़ी जीवन में आने वाले परिवर्तनों व उनसे उत्पन्न पीड़ा व संघर्ष का भी जीवंत चित्रण किया है। उन्होंने अपने साहित्य में सम्पन्न मारवाड़ी समाज में प्रचलित विवाह प्रथा, अनमेल विवाह, संयुक्त परिवार का दर्द, परिवार विघटन, दहेज प्रथा आदि का सजीव वर्णन किया है। उनके सटीक सामाजिक वर्णन को लेकर डॉ. उषाकीर्ति राणावत लिखती हैं कि – ''राजनीति यदि प्रभाजी के साहित्य का प्रमाण भर है तो सामाजिक परिवेश उनके कथा–संसार का प्रमुख नियामक

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

है। समाज में ये स्थितियाँ न होती तो ये उपन्यास न लिखे जाते या लिखे जाते तो ऐसे न होते।''[1]

आजादी के इतने वर्षों पश्चात् भी समाज में जो आमूलचूल परिवर्तन अपेक्षित था वह नहीं आया है। आज भी हम हमारी सड़ी–गली मान्यताओं व परम्पराओं से मुक्ति नहीं पा सके हैं। प्रभाजी ने अपने उपन्यासों में भारतीय एवं पाश्चात्य समाज का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से अंकित किया है। आधुनिकीकरण के कारण अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन भी हुए हैं। इससे भारतीय एवं पाश्चात्य स्त्रियों को भी काफी हद तक स्वतंत्रता तथा अनेक नये विकल्प उपलब्ध हुए हैं। परन्तु इससे स्त्री–पुरूषों के सम्बंधों में कितना परिवर्तन हुआ है यह कहना कठिन है क्योंकि स्त्री के साथ बढ़ती हुई हिंसा का विकराल रूप दिन ब दिन सामाजिक जीवन में उद्घाटित हो रहा है। जीवन के इस घिनौने सच पर प्रकाश डालते हुए प्रभाजी ने सामाजिक संरचना की कुछ मूलभूत कमजोरियों को भी उभारा है। प्रभाजी ने भारतीय एवं पाश्चात्य नारी की स्थिति को भी गहराई से देखकर उसका उल्लेख किया है।

<u>अनमेल–विवाह की समस्या</u>

प्रभाजी ने अपने उपन्यास साहित्य में मारवाड़ी समाज में अल्पायु में विवाह, रूपयों के लाचल में किये गये विवाह तथा गरीबी की वजह से किये गये अनमेल विवाह की समस्या पर प्रकाश डाला है। यहीं अनमेल विवाह अंत में परिवार की तबाही का कारण भी बनता है। इसके प्रमाण हमें प्रभाजी के साहित्य में आए विभिन्न उदाहरणों से मिलते हैं।

उपन्यास 'अपने–अपने चेहरे' में मिस्टर गोयनका का विवाह चौदह साल की लड़की से हो जाता है, जो उनकी नजर में एकदम बेमेल विवाह था। बड़े भाई के दबाव में आकर मर्जी के विरूद्व किये गये विवाह को लेकर मिस्टर गोयनका कहते हैं– ''पर मैंने तो सुहागरात के दिन ही कह दिया था, मैं तुमसे प्रेम नहीं करता हूँ। यह विवाह मेरी मर्जी के

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

खिलाफ हुआ है। बेमेल, बिलकुल बेमेल।''[2] यह अनमेल विवाह मिस्टर गोयनका और सरला गोयनका में दूरियाँ स्थापित कर देता है। यह दूरी गोयनका के जीवन में दूसरी औरत को लाकर 'पति–पत्नी और वह' का त्रिकोण बना देती है।

'छिन्नमस्ता' उपन्यास में गुप्ता हाऊस की सुन्दर, सुशील, दूध–सी परी सरला की शादी वर पक्ष की अमीरी के कारण काले और बदसूरत लड़के के साथ कर दी जाती है। उसी तरह गुप्ता जी दोस्ती को निभाने के चक्कर में अपने बेटे की शादी एक ऐसी लड़की से कर देते हैं, जो उसके लायक नहीं होती तथा मनपसंद भी नहीं होती। इस अनमेल विवाह को लेकर उसका नर्वस ब्रेकडाऊन हो जाता है। इस अनमेल विवाह को लेकर मिसेज विल्किन कहती है कि, ''मिस्टर गुप्ता, शी इज ए रौंग मैच फॉर योर सन.................. दे आर पोल्स अपार्ट।''[3]

इसी तरह से ''पीली–आँधी'' में माधो की शादी दस वर्ष की बालिका से कर देते हैं, परिणामस्वरूप माधो शादी के पहले ही दिन पत्नी को खारिज कर देता है। पत्नी की मृत्यु के बाद माधो की दूसरी शादी पद्मावती से होती है जो पद्मावती के लिये पूर्ण रूप से अनमेल साबित होती है। पद्मावती की इस अवस्था को देख डॉ. वैशाली देशपाण्डे लिखती है कि , ''पदमावती एक स्वस्थ एवं सुन्दर लड़की होने के बावजूद पिता की आर्थिक दुरावस्था के कारण अनमेल विवाह की शिकार होती है। उसके पति माधो बाबू उससे बीस वर्ष बड़े हैं।''4 इसी तरह मोहन भैय्या व उनके जैसी अनेक महिलाएँ हैं जो अनेकानेक कारणों से अनमेल विवाह को बाध्य हैं।

<u>घरेलू हिंसा का चित्रण</u>–

हमारे समाज में स्त्री सदियों से शोषण का शिकार रही है। आज भी पति परायण स्त्री घर की देहरी में रहकर रोते–कलपते पति के अत्याचार को सहन करना अपनी

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

मजबूरी मानती है। वह घर छोड़ने का साहस नहीं कर पाती। जबकि प्रभाजी के उपन्यास 'अग्निसंभवा' की आईवी अपने पति के अत्याचार को सहन करने से इन्कार कर चीन से हांगकांग भाग जाती है। आईवी कहती है–''ये साले चीनी पति होते ही हरामी हैं, वह एक मेरा पति था... दिन–रात लाल किताब लिये विश्व क्रान्ति की बातें करता रहता। कॉमरेड पार्टी का वरिष्ठ सदस्य कम्युनिस्टी किचन में पेट भर ही जाता था और आये दिन शराब के नशे में मुझे पीटता था। मैं दिन भर खेत में खटती रहती, थोड़े पैसे और मिल जायें इसके लिए रात को जाग–जागकर कपड़े सिलती रहती।''[5]

इस प्रकार लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि भारत एवं पाश्चात्य समाज में पुरूषों द्वारा स्त्रियों का शोषण समान रूप से किया जाता रहा है। घरेलू हिंसा संसार की सबसे अमानवीय व घिनौनी हिंसा है जो व्यापक तौर पर दिखाई देती है तथा इसका सबसे अधिक कुप्रभाव स्त्रियों पर ही पड़ा है। हिंसा के पहले पाठ की शुरूआत पुरूष घर से ही करता है।

'अपने–अपने चेहरे' में रीतू की शादी कुणाल से होती है। नीना नाम की लड़की का कुणाल की जिंदगी में प्रवेश होता है। रीतू इसे बर्दाश्त न कर उसका विरोध करती है। बात हाथापाई पर आ जाती है, रीतू अपने घर लौटती है तो उसकी माँ मिसेज गोयनका अपने पति से कहती है–'' हाँ और क्या, ठीक कह रही हूँ। पति जरा–सा हाथ उठा दे तो औरत घर छोड़ दे?''[6]

इसी प्रकार 'पीली आँधी'' में सोभा गौतम की पत्नी है। गौतम नपुंसक है, अतः माँ बनने की चाहत में सोभा सुजीत से नाता जोड़ती है। गौतम भी सोभा पर हाथ उठाता है, सोभा घर छोड़कर चली जाती है। 'स्त्री पक्ष' की वृंदा को पिता की मेज से पत्रिका प्राप्त होती है जिसमें पुरूष के हाथ में चाबुक लिये खड़े होने का नजारा होता है। मिसेज

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

गोयनका जैसी स्त्रियाँ इसे पति का अधिकार मानते हुए जायज ठहराती है जबकि आज की स्त्री पुरूष की मारपीट सहन करने की बजाय उसे तलाक देने के लिये तत्पर रहती है। स्त्री स्वयं को विश्व के निर्माण की जिम्मेदार नहीं मानती। वह मानती है कि विश्व उन पुरूषों ने बनाया है जो कि सामाजिक आधिपत्य स्थापित करते हुए शासन कर रहे हैं। प्रभाजी के शब्दों में–

''मैंने अपने को
पहनाया तुम्हारे पाँवों में
जूती बन,
बिछी बिस्तर पर
चादर बन
कभी टंगी खूंटी पर
तुम्हारा मुखौटा बन
मैं बनी वस्तु
तुम रहे भोक्ता।''[7]

विधवा जीवन की व्यथा–

भारतीय समाज में विधवा स्त्री का जीवन दुख और क्लेशों से भरा हुआ है। बिना किसी दोष के स्त्री अपने पति की मृत्यु के पश्चात् नितान्त असहाय हो जाती है। समाज द्वारा उसकी सारी इच्छाएँ व आनन्द छीन लिया जाता है तथा नीरस जीवन जीने को बाध्य कर दिया जाता है। इसी के इसी अभिशप्त जीवन का मार्मिक वर्णन करते हुए लेखिका 'पीली आँधी'' में कहती है–विधवा रेवा जब मायके आ गई तो वह वापस ससुराल नहीं गई। ताईजी का स्पष्ट शब्दों में कहना था–''मैं नहीं इसको वापस भेजने की। वहाँ क्या

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

रखा है? जिन्दगी भर मेरी छोटी दाई की तरह देवर–जेठ की गृहस्थी खटती रहेगी। यह कुछ न कर पाएगी और न इसके बच्चे।''[8] इसी उपन्यास में ताई उर्फ पदमावती के वैधव्य जीवन की त्रासदी के साथ–साथ पन्नालाल जी और पद्मावती के भावात्मक प्रेम को भी चित्रित किया गया है। हमारे समाज में आज भी विधवा स्त्री के छोटे–छोटे सुखों पर पाबंदी की जंजीर लगा दी जाती है। परिवार के होते हुए भी उसे अकेलापन खलता रहता है। ऐसे में किसी के प्रति उसका आकर्षित होना भी स्वाभाविक है। समकालीन भारतीय समाज में विधवा स्त्री को तमाम कानूनी उपबन्ध, शिक्षा एवं जागरूकता का ज्ञान होने पर भी उसे अपेक्षित सम्मानजनक स्थिति प्राप्त नहीं होती है।

लैंगिक असमानता व भ्रूण हत्या–

पितृसत्तात्मक व्यवस्था द्वारा संचालित समाज में सत्ता व सम्पत्ति का अधिकारी पुत्र को ही माना जाता है। पुत्र की इच्छा समाज के हर परिवार में रहती है और पुत्री से उसके जन्म के अधिकार को ही छीना जाता है अर्थात् उसकी भ्रूण हत्या कर दी जाती है। ऐसी घटनायें विदेश में भी आम है। लेखिका ने अपने उपन्यास 'अग्निसंभवा' में चीनी महिला आईवी के घर पहली संतान बेटी होने पर पिता द्वारा उसका मुँह भी न देखने तथा सास द्वारा मार डालने पर आईवी के दुख का वर्णन करते हुए कहा है कि–'' मेरी पहली संतान लड़की थी। सरकार की ओर से हम दो ही बच्चे पैदा कर सकते थे। अतः किसान के घर लड़की होना अभिशाप था। पति ने बच्ची को देखा तक नहीं। सास ने खाने में पता नहीं कौनसी दवा मिलाकर दी कि दूध से भरी मेरी छातियाँ सूख गई। बच्ची को दूध सास ही पिलाती थी। पर वे उसे दूध नहीं पिलाती थी। घोला हुआ सफेद पानी जैसा स्टार्च पिलाती रही। बच्ची का पेट फूलता गया और दस दिन में वह मर गई।''[9] सच्चाई का पता चलने पर आईवी के सास को कहने पर सास उल्टी गालियाँ निकालती है तथा कहती

है–''तुम्हारी तो एक बेटी मारी गई और वह भी धीरे–धीरे। मेरी तो पहली बेटी को तुम्हारा ससुर पोखर में डुबो आया था। किसान के घर भला बेटी की क्या जरूरत? तुम्हारे ससुर ने मेरी दो बेटियों को ऐसे ही मार डाला।''[10]

हमारे समाज में इस प्रकार की वारदातें सामान्य घटना बन गई है जिसके फलस्वरूप लड़कों के अनुपात में लड़कियों की संख्या लगातार घटती जा रही है। प्रभाजी स्वयं घर की सातवी संतान एवं पांचवी पुत्री थी, अतः उन्हें घर में शोषित जीवन बिताना पड़ा। 'छिन्न मस्ता' उपन्यास की प्रिया को उसकी दादी बोझ समझती है। 'अपने–अपने चेहरे' में टिंकू रीतू का एक मात्र पुत्र है। वह अपनी माँ रीतू को कुल दीपक का अर्थ समझाता है। उसे उसकी दादी ने समझाया था–''कुल दीपक वह जो अपने परिवार की लकीर को जिंदा रखे। परिवार का नाम रोशन करे।''[11] इसी प्रकार 'पीली आँधी' उपन्यास में मिस्टर अग्रवाल के तीन बेटियाँ हैं। मिस्टर अग्रवाल के मित्र मिस्टर गुप्ता हमेशा उनको बेटा न होने का एहसास करवाते हुए कहते हैं–''सोमा के भाई नहीं। अरे आप लोग क्या जिन्दगी भर बैठे रहेंगे? पीहर तो भाईयों के नाम से चलता है।''[12] बेटे का अभाव मिसेज अग्रवाल को दुखी और अपराधी होने का अहसास कराता है। 'स्त्री पक्ष' उपन्यास की वृंदा को पहली संतान बेटी होने पर निराशा होती है। इस समाज में मिसेज अग्रवाल एवं वृंदा जैसी अनेक स्त्रियाँ हैं जो बेटा पाने की चाहत में पड़पती रहती है।

सदियों से समाज में बेटियों को बोझ समझने के साथ–साथ पराया धन भी समझा जाता है। 'स्त्री पक्ष' उपन्यास में वृंदा का भाई उसे पराया धन कहकर चिढ़ाता था। पराया धन मानने के साथ–साथ लड़की को दोयम दर्जे की मान्यता देते हुए उसे अपने अधिकारों से भी वंचित रखा गया है।

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

शिक्षा से वंचित स्त्री–

हमारे समाज में पुरूषों के बराबर स्त्री को शिक्षा दिलवाने की मानसिकता नहीं रही है। उसे शिक्षा से वंचित रखा गया है। 'अपने–अपने चेहरे' उपन्यास की मिसेज गोयनका अनपढ़ है जो पूर्ण रूप से अपने पति पर आश्रित है तथा पति की जिंदगी में आई दूसरी स्त्री रमा को इस कारण चुपचाप सहती है। उन्हें अपने अनपढ़ होने का अफसोस था–''मुझे किसी ने पढ़ाया क्यों नहीं, क्या यह मेरा कसूर था? लेकिन जब इन्होंने पढ़ाने की कोशिश की तब भी क्या मेरा मन लगा? मन लगता भी कैसे?''[13] इसके बावजूद भी मिसेज गोयनका अपनी बेटी रीतू को ज्यादा पढ़ाने के पक्ष में नहीं थी। उनका विचार था कि लड़कियाँ अगर ज्यादा पढ़–लिख जाए तो वे हाथ से निकल जाती हैं। बचपन से ही लड़कियों को घरेलू कार्य में इस कदर माहिर बना दिया जाता है कि आगे जिंदगी में उसे ससुराल में किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

'पीली आँधी' में रूंगटा परिवार की पढ़ी–लिखी बहुओं को भी घरेलू कामकाज में ही व्यस्त कर दिया जाता है। लता भाभी द्वारा नई दुल्हन सोमा को बहुओं द्वारा किये जाने वाले कार्यो, भंडार घर सम्भालने एवं अन्य दैनिक कार्यो की जानकारी दी जाती है। इस प्रकार समाज में स्त्री की प्रतिभा को निखारने के बजाय कैद कर रखा जाता है तथा उसे आजीवन घरेलू कामकाज में धकेल देने की प्रवृत्ति ही दिखाई देती है।

दहेज का दानवी स्वरूप–

आधुनिक हिंदू समाज में दहेज अथवा वर मूल्य विवाह की सबसे कठिन और भयंकर समस्या है। इस कुप्रथा को रोकने के लिये सरकारी और गैर सरकारी प्रयत्नों को विशेष सफलता नहीं मिली है। यह भारतीय समाज व्यवस्था को लगी एक भयंकर बीमारी है। हमारे समाज में विवाहोत्सव पर भेंट अथवा उपहार लेन–देन का सिलसिला कई सालों से

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

चला आ रहा है। प्रारम्भ में यह विनिमय स्वरूप था, परन्तु बाद में वह एकपक्षीय होकर रह गया। भारत के अधिकतर प्रदेश व क्षेत्रों में इसका चलन रहा है। आज दहेज का अर्थ वधू पक्ष द्वारा दिया गया उपहार न रहकर वर पक्ष द्वारा की गई मांग या विवाह सम्पन्न होने में बाधा स्वरूप किया गया सौदा रह गया है। आज समाज में दहेज ने अत्यन्त विकृत रूप धारण कर लिया है। इस बात पर धर्मपाल लिखते हैं–''आज दहेज का वीभत्स रूप समाज में व्याप्त हो गया है। 'मांग' या 'याचना' अथवा 'भिक्षा' शब्द दहेज के पर्याय बन चुके हैं। वांछित भिक्षा न मिलने पर, नारी जाति के शत्रु एवं लोभी, लालची पुरूष, नवविवाहिता पर अत्याचार करते हैं, उसे यातनाएँ देते हैं और मांगी हुई वस्तु अथवा धन राशि के प्रतिरोध में उसकी हत्या कर देते हैं।''[14]

'छिन्नमस्ता'' में प्रभाजी मारवाड़ी समाज में दहेज कितना अनिवार्य है तथा समाज इस कुप्रथा को किस प्रकार वहन करता आ रहा है, इस पर प्रकाश डालते हुए कहती है कि –''1962 में भी अच्छे घर–वर के लिए दहेज में नगद लाख रूपये की जरूरत थी।''[15] प्रभाजी यह भी बताना चाहती है कि पारंपरिक विचारों से ग्रसित मारवाड़ी समाज में जिस दिन बेटी जन्म लेती है, उसी दिन से माँ अपने खुद के दहेज में मिली हुई बहुमूल्य चीजें, टीशू के थान, सच्चे जरदोज की साड़ियाँ, घाघरे, ओढ़ने, चाँदी के बर्तन, गहने सब रखने लगती है ताकि बेटी को दहेज देने में उसे सुविधा हो सके। 'पीली आँधी' में मिस्टर अग्रवाल अपनी सुन्दर, सुशील बेटी की शादी कलकत्ता वाले रूंगटा परिवार में करने के लिए बीस लाख रूपये का दहेज देते हैं। ''अपने–अपने चेहरे'' की रीतू की शादी मिस्टर राजेन्द्र गोयनका ढेर सारे रूपये दहेज में देकर ऐसे लड़के से करा देते हैं जो आगे चलकर घर में दूसरी औरत को लाना चाहता है। रीतू अपने दर्द को व्यक्त करती हुई कहती

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

है–''मम्मी, आप लोगों ने कुणाल के साथ मुझे धन के तराजू पर तौल दिया, पर क्या धन ही सब कुछ है।''[16]

आज भी हमारे समाज में दहेज प्रथा का बोलबाला अपने चरम पर है, भले ही उसका रूप और रूख नया है। प्रभाजी अपनी सम्पूर्ण संवेदना उस दुल्हन के प्रति प्रकट करती है, जिसका शोषण दहेज के कारण होता है और उसकी मृत्यु के साथ ही इस क्रूरता का अन्त होता है। वह कहती हैं–

''कुछ ही दिन पहले,
बगल के फ्लेट वाली दुल्हन
मर गई छिड़क कर
अपने ही ऊपर
किरासन तेल।''[17]

स्त्री अस्तित्व की समस्या

स्त्री समाज में अपना अस्तित्व स्थापित करने का प्रयास करती है तो समाज उसके मार्ग में कई रोड़े अटकाने का ही प्रयास करता रहा है। 'छिन्नमस्ता' में प्रिया को व्यावसायिक जगत में कामयाबी हासिल करते देख उसके पति नरेन्द्र के अहं को चोट पहुंचती है। नरेन्द्र प्रिया से कहता है कि वह अपनी जिम्मेदारी बखूबी नहीं निभा पा रही है तथा वह उसे बर्बाद करने की भी धमकी देता है। इसका खुलासा प्रिया अपने मित्र फिलिप के समक्ष करती है। इस पर फिलिप पुरूष मानसिकता का पर्दाफाश करते हुए कहता है कि–''नरेन्द्र जैसे पुरूष स्त्री की महत्वकांक्षा को समझ नहीं सकते। वे एक सफल स्त्री की ओर आकर्षित जरूर होते हैं मगर उनके भीतर का पुरूष बस उस स्त्री को दबोचना चाहता है, यानी उसके अहम को संतुष्टि मिलती है कि देखो ऐसी औरत भी मेरे वश में है।''18

IJIRSET

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

'अपने–अपने चेहरे' की रमा भी प्रिया जैसी स्त्री है जो व्यावसायिक जगत में एक कामयाब महिला है। रमा अकेली स्त्री है तथा एक शादी शुदा पुरूष से प्रेम करती है। समाज द्वारा बनाई लकीर को उसने पार करने का प्रयास किया, जिसकी उसे कीमत चुकानी पड़ी तथा कदम–कदम पर उसे अपराधी होने का अहसास दिलाया जाता रहा। रमा सोचती है–''मेरा यह अकेले जीवित रहना भी उन लोगों के लिए चुनौती है। समाज औरत को केवल संबंधों के माध्यम से जीवित देखने का आदी है। जब समाज किसी औरत के विरोध में खड़ा होता है, तब उसके पास कोई मानवीय पैमाना नहीं होता।''19

''आओ पेपे घर चलें' की मरील, जिसका पति उसे छोड़कर किसी कम उम्र वाली लड़की के साथ भाग गया। मरील अपनी दो बेटियों के साथ पेट पालने के लिए काम करती है। अपनी दुखभरी दास्तान के रूप में वह कहती है–''यदि लकीर से हटी तो यह दर्द की पहली कड़ी है। दुनिया को झेलने के लिए लौह का कवच पहनना होगा।''[20]

पितृसत्तात्मक व्यवस्था दुनिया के किसी भी कोने में स्त्री के प्रति सदैव निष्ठुर ही रही है। इस सत्य का पर्दाफाश लेखिका ने अपने साहित्य में किया है। स्त्री सदैव से अपने अस्तित्व की लड़ाई अकेले ही लड़ती आई है और आगे भी उसे अपना संघर्ष अकेले ही लड़ना पड़ेगा। प्रभाजी कहती है–

'मेरी बहन!
छोड़ दो,
किसी और से मिली मुक्ति का मोह
तोड़ दो, शापग्रस्तता की कारा
तुम अपना उत्तर स्वयं हो अहल्या!
ग्रहण करो। वरन की स्वतंत्रता।''[21]

ISSN(Online) : 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An UGC Approved, High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

UGC Approval No: 48027

Vol. 6, Issue 12, December 2017

संदर्भ सूची

1. डॉ. उषा कीर्ति राणावत–प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, पृष्ठ–78, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
2. प्रभा खेतान–अपने–अपने चेहरे', पृष्ठ–49 किताबघर, नई दिल्ली, 1996
3. प्रभा खेतान–छिन्नमस्ता, पृष्ठ–34, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
4. डॉ. वैशाली देशपाण्डे–स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, पृष्ठ–196–197 विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007
5. प्रभा खेतान–अग्नि संभवा, अप्रैल 1992–हंस, पृष्ठ–55, हंस मासिक पत्रिका, मार्च–मई 1992
6. प्रभा खेतान–अपने–अपने चेहरे, पृष्ठ–99 किताब घर, नई दिल्ली, 1996
7. प्रभा खेतान–कृष्णधर्मा मैं, पृष्ठ–27 स्वर समवेत प्रकाशन, कलकत्ता, 1986
8. प्रभा खेतान–पीली आँधी, पृष्ठ–133, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
9. प्रभा खेतान–अग्निसंभवा, अप्रैल–1992, हंस, पृष्ठ–58, हंस मासिक पत्रिका, मार्च–मई, 1992
10. वहीं, पृष्ठ–58
11. प्रभा खेतान–अपने–अपने चेहरे, पृष्ठ–120 किताबघर, नई दिल्ली, 1996
12. प्रभा खेतान–पीली आँधी, पृष्ठ–169 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
13. प्रभा खेतान–अपने–अपने चेहरे, पृष्ठ–15, किताबघर, नई दिल्ली, 1996
14. धर्मपाल–नारी एक विवेचन, पृष्ठ–155 भावना प्रकाशन, दिल्ली, 1996
15. प्रभा खेतान–छिन्नमस्ता, पृष्ठ–79 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
16. प्रभा खेतान–अपने–अपने चेहरे, पृष्ठ–83 किताबघर, नई दिल्ली, 1996
17. प्रभा खेतान–हुस्नबानो और अन्य कविताएँ, पृष्ठ–58 स्वर समवेत प्रकाशन, कलकत्ता, 1987
18. प्रभा खेतान–छिन्नमस्ता, पृष्ठ–203 राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
19. प्रभा खेतान–अपने–अपने चेहरे, पृष्ठ–195 किताबघर, नई दिल्ली, 1996
20. प्रभा खेतान–आओ पेपे घर चलें, पृष्ठ–25, सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1990
21. प्रभा खेतान–अहिल्या, पृष्ठ–11 सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1988.